विद्या भवन बालिका विद्यापीठ शक्ति उत्थान आश्रम 811311 लखीसराय।

वर्ग- दशम, विषय हिंदी

दिनांक 31-3 -2020

सरिता कुमारी

पाठ -1 .सूर के पद (क्षितिज काव्य खंड)

पद संख्या- दो

मन की मन ही मांझ रही।

कहिए जाहि कौन पे ऊधौ, नाही परत कही।

अवधि अधार आस आवन की ,तन मन बिथा सही।

अब इन जोग संदेसनि सुनि सुनि, विरहिनि विरह दही।

चाहति हुतीं गुहार जितहि तैं, उततैं धार सही।

'सूरदास 'अब धीर धरा ही क्यों, मरजादा न लही।।

शब्दार्थ-

अवधी -समय

आधार -आधार

आस-आशा

बिथा-व्यथा

जोग संदेसनि- योग संदेश की बातें

चाहती हुतीं- चाहती थी

मरजादा- मर्यादा।

भावार्थ

गोपियों के मन की बात मन में धरी की धरी रह गई। वह श्री कृष्ण से बहुत कुछ कहना चाहती थी परंतु वह अब नहीं कह पाएंगीं। वह कहती हैं कि इतने समय से श्री कृष्ण के लौटकर आने की आशा को हम आधार मानकर तन मन हर प्रकार की विरह की व्यथा सह रही थी यह सोचकर कि वह आएंगे तो हमारे सारे दुख दूर हो जाएंगे लेकिन श्री राम ने हमारे लिए ज्ञान योग का संदेश भेज कर हमें और भी दुखी कर दिया है हम विरह की ज्वाला में दहकने लगीं हैं।ऐसे समय में कोई अपने रक्षक को पुकारता है परंतु हमारे जो रक्षक हैं वही आज हमारे दुख का कारण है।हे उद्धव !अब हम धीरज क्यों धरे, कैसे धरे ?जब हमारे आशा का एकमात्र तिनका भी डूब गया प्रेम की मर्यादा है कि प्रेम के बदले प्रेम ही दिया जाए ।श्री कृष्ण ने हमारे साथ छल किया है ।उन्होंने मर्यादा का उल्लंघन किया है।

छात्र कार्य

- दिए गए पठन सामग्री को ध्यानपूर्वक पढ़कर उत्तर पुस्तिका में शब्दार्थ याद कर लिखें।
- दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर पुस्तिका में साफ एवं स्पष्ट अक्षरों में तैयार करें।

प्रश्न संख्या- 1 गोपियों की मनोदशा कैसी है?

प्रश्न संख्या-२ उद्धव द्वारा दिए गए योग के संदेश का गोपियों पर क्या प्रभाव पड़ा?

प्रश्न संख्या -3 मरजा दाना नहीं का क्या तात्पर्य है?